ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(9): 22-25
www.allresearchjournal.com
Received: 09-07-2019
Accepted: 13-08-2019

डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल
प्राध्यापक, खड़गपुर कॉलेज, हिंदी विभाग खड़गपुर, पश्चिम बंगाल, भारत

Correspondence
डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल
प्राध्यापक, खड़गपुर कॉलेज, हिंदी विभाग खड़गपुर, पश्चिम बंगाल, भारत

समकालीन कवियों का परिवेश - चित्र

डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल

प्रस्तावना

अपने युग के परिवेश को वाणी देना प्रत्येक युग के कवि का मुख्य कर्म होता है। प्रत्येक युग का कवि अपने पूर्व के कवियों से अपने युग के प्रति अधिक सजग और सतर्क दिखाई देता है। वह अपनी समसामयिक परिस्थितियों से पूरी तरह से प्रभावित होता है और तत्कालीन घटनाक्रम को वह अपनी रचनाओं से वाणी प्रदान करता है। डॉ.ब्रजनाथ गर्ग इस संबंध में कहते हैं- "आज की कविता की बात करते हुए हमें स्वनामधन्य, जाने-माने कवियों के साथ-साथ नये और उभरते हुए कवियों की कविताओं को भी दृष्टि में रखना होगा, क्योंकि ये लोग आज की समस्या बहुल जीवन के विभिन्न पक्षों, आयामों और संवेदनाओं को अपनी कविता का विषय बनाकर एक ओर अपनी रचना प्रक्रिया का परिचय दे रहे थे, तो दूसरी ओर आज की कविता को बंधे हुए घेरों से निकालकर जीवन और समाज के बहुरूपीय संघर्ष की अभिव्यक्ति द्वारा उसे तीव्र गति से जीवन की समतल भूमि की ओर अग्रसर कर रहे हैं।"[1]

समकालीन कविता में अनेक कवि अपने पुराने वादों एवं धाराओं से कटते नजर आते हैं।वे काल्पनिक सरोकारों की छटपटाहट से त्रस्त होकर वर्तमान परिस्थितियों के साथ सुर मिलाते हुए दिखते हैं।

समकालीन कविता के कवियों को चार दशकों में बांट कर देखा जा सकता है जो अपनी युगीन परिस्थितियों के बीच काव्य सृजन करते रहे।

सातवें दशक के कवियों में जगदीश चतुर्वेदी, सौमित्र मोहन, कैलाश वाजपेयी, लीलाधर जगूड़ी, राजकमल चौधरी, केदारनाथ सिंह, धूमिल, चंद्रकांत देवताले, दूधनाथ सिंह, राजीव सक्सेना, रघुवीर सहाय, रामदरश मिश्र आदि आते हैं जो उस समय की सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों से पूर्णत: प्रभावित रहे हैं- जैसे 1962 का चीन के साथ भारत का युद्ध, 1964 ईस्वी में नेहरू जी की मृत्यु, 1967 के आम चुनाव, कम्युनिस्ट पार्टी का विभाजन आदि अनेक घटनाएं कवियों की मानसिकता को प्रभावित करती हैं और साहित्य के लिए प्रेरित करती हैं। इस दशक में कविता की दो धाराएं चलीं– एक 'अकविता' दूसरी 'प्रगतिशील काव्य धारा' । 'अकविता' धारा अत्यंत प्रचलित हुई। किस धारा के प्रवर्तक गिंसबर्ग थे । उन्होंने मानव के अनुभवों को यथावत प्रस्तुत करने की सलाह दी है और उसमें बनावटीपन को सिरे से नकार दिया है ।इस युग में युगीन समस्याओं पर विशेष बल दिया गया है।

आठवें दशक की कविताओं के कवियों में धूमिल, नरेंद्र मोहन, लीलाधर जगूड़ी, नागार्जुन, केदारनाथ सिंह, जगदीश चतुर्वेदी, सोहन शर्मा आदि आते हैं । इस युग में व्यंग्य के माध्यम से कवियों ने जनता के मनोभावों को दर्शाने का प्रयास किया है और समाज को जागरूक करने में अपनी पूर्ण भूमिका निभाई है।

नवम दशक के कवियों में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, दूधनाथ सिंह, अरुण कमल, राजेश जोशी, सुरेंद्र तिवारी, उदय प्रकाश, विष्णु प्रभा, रामकुमार गुप्त, भागवत शरण अग्रवाल, नीरज ठाकुर, ऋतुराज, मलय आदि आते हैं। इस युग में घटित घटनाओं जैसे इंदिरा गांधी की हत्या, आतंकवाद, सत्ता परिवर्तन, मंडल आयोग जैसी अनेक ज्वलंत घटनाओं ने जनमानस को अत्यंत प्रभावित किया। जगह- जगह सांप्रदायिकता और हिंसा की स्थिति सामने आई। राजनीति को नए सिरे से समझने की आवश्यकता महसूस हुई ।कवि भी अपने को इससे अछूता न रख सका।

दसवें दशक के कवियों में भारत यायावर, सोहन शर्मा, मंगलेश डबराल, केदारनाथ सिंह, रमणिका गुप्ता, निशा निशांत, सुनील जैन आदि अनेक कवि आते हैं। इन कवियों की कविताओं में समसामयिक परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण हुआ है।

संक्षेप में हम कुछ समकालीन कवियों की समसामयिक दृष्टि को इस प्रकार देख सकते हैं-

चंद्रकांत देवताले व्यवस्था में परिवर्तन के लिए सामूहिक विरोध का आह्वान करते हैं। वे कहते हैं-

"उठो और अपनी हड्डियों को बजाना शुरू कर दो/ भूखंड तप कर भट्टी बन रहा है।/ तन कर सीधे खड़े हो जाओ/ और कहो नहीं/ बहुत हो चुका 'अब और नहीं' एकदम नहीं/ इस नहीं की आंधी में उड़ने लगेंगे/ तमाम कागजों के पुलिन्दे, वर्दियों/ सुभाषित वाक्य और कुर्सियां/" [2]

रघुवीर सहाय की 'एक था समय' शीर्षक कविता में तत्कालीन समाज की दुर्दशा का चित्र खींचा गया है

"एक भयानक चुप्पी छाई है समाज पर
शोर बहुत है पर सच्चाई से कतरा कर गुजर रहा है
एक भयानक एका बांधे है समाज को कुछ ना बदलने के समझौते का है एका।"[3]

लीलाधर जगूड़ी समाज को बदलने की चाह रखते हैं। वे तत्कालीन परिस्थितियों के प्रति क्षुब्ध हैं और इसका चित्रण उन्होंने 'नाटक जारी है' में किया है

"मेरे दिमाग पर सवार यह वह आदमी नहीं है
जिसने तुम्हें आजादी के बाद का चकमा दिया
और नक्शा बदलने का महकमा दिया।"4

जगूड़ी जी अपने परिवेश से कभी भी कट नहीं पाते हैं। वह निरंतर उससे प्रभावित होकर रचनाएं लिखते हैं । वे वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था से भी जुड़ते हैं-

"और लेकिन वे जब फायर करेंगे
तो यह तय है कि
इस बार कौवे नहीं मरेंगे ।"[5]

जगूड़ी की कविता के बारे में नरेंद्र सिंह कहते हैं – "जगूड़ी की कविताएं नए विपक्ष की कविताएं हैं, जो इस व्यवस्था में आज के भारतीय मनुष्यों की करुणा का पुनराविष्कार या उसकी तलाश में विचार के स्तर पर निर्भयता की हद से गुजरती हुई शिल्प के उद्रेक को सजीव नाटकीयता में अर्थान्तरित कर देती है। अपने समय की गहरी हिस्सेदारी यानी संबंधों की भिड़ंत में जूझती जीवन और अनुभव को तीखी और विचलित कर देने वाली भाषा से जोड़कर पेट और प्रजातंत्र के बोध दरार की तरह पड़े आदमी को भी ये कविताएं प्रस्तुत करती हैं। ये कविताएं समाज की कामना करती लगती हैं।"[6]

धूमिल 'साठोत्तरी पीढ़ी के मोहभंग कवि' कहे जाते हैं। इनकी कविताओं में तत्कालीन सामाजिक,आर्थिक, राजनीतिक आदि व्यवस्थाओं के प्रति तीव्र आक्रोश देखने को मिलता है। इनकी कविताएं समसामयिक समाज की एक ज्वलंत तस्वीर हमारे सामने उपस्थित करती हैं-

"एक आदमी रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है जो न रोटी बेलता है, ना रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है/ मैं पूछता हूं- 'वह तीसरा आदमी कौन है? मेरे देश की संसद मौन है।"7

कवि की लड़ाई निरंतर शोषकों के विरोध और शोषितों के समर्थन में है। वे एक ऐसे समाज की कल्पना करते हैं, जिसमें शोषितों का भी समान अधिकार हो।

"कल सुनना मुझे

जब दूध के पौधे पर झड़ रहे हो सफेद फूल
नि:शब्द पीते हुए बच्चे की जुबान पर
और रोटी खाई जा रही हो चौके में
गोश्त के साथ जब
खटकर (कमाकर) खाने की खुशी परिवार और भाईचारे में
बदल रही हो- कल सुनना मुझे।
आज मैं लड़ रहा हूं।"[8]

धूमिल सदियों से उपेक्षित सर्वहारा वर्ग, गरीब, मजदूर आदि को जागृत करने का प्रयास करते हैं। उनका ऐसा मानना है कि जब तक ये वर्ग संगठित होकर भ्रष्ट व्यवस्था के खिलाफ खड़े नहीं होंगे, तब तक उनको उनके अधिकारों की प्राप्ति नहीं होगी। अगर उन्हें इस समाज में अपने अधिकारों की प्राप्ति करनी है तो सबसे पहले उन्हें एकजुट होकर इस दिशा में कदम बढ़ाना होगा।

"इसलिए उठो और अपने भीतर
सोए हुए जंगल को आवाज दो
उसे जगाओ और देखो
कि तुम अकेले नहीं हो
और न किसी के मोहताज हो
लाखों हैं जो तुम्हारे इंतजार में खड़े हैं
वहां चलो उनका साथ दो
और इस तिलिस्म का जादू उतारने में
उनकी मदद करो और साबित करो
कि वह सारी चीजें अंधी हो गई हैं
जिनमें तुम शरीक नहीं हो।"[9]

मंगलेश डबराल भी समकालीन कविता के एक सशक्त कवि माने जाते हैं। वे एक जन कवि के रूप में हमारे सामने उपस्थित होते हैं, जो सामान्य जन की वेदना दुख और कष्टों को अपनी रचनाओं के माध्यम से सजीवता प्रदान करते हैं। 'पहाड़ पर लालटेन' नामक कविता में वे एक दुखी पिता की मनोस्थिति का चित्रण करते हुए कहते हैं-

"दिन गए लकड़ी ढोकर मां आग जलाती है
पिता डाकखाने में चिट्ठी का इंतजार करके
लौटते हैं हाथ- पांव में
दर्द की शिकायत के साथ
रात में जब घर कांपता है
पिता सोचते हैं जब मैं नहीं हूँगा
क्या होगा इस घर का ।"[10]

विरोध और विद्रोह मुक्तिबोध की कविता का मुख्य स्वर है। मुक्तिबोध ने अपनी कविताओं में फैंटेसी के माध्यम से मानव जीवन की पीड़ा को उपस्थित किया है। साथ -ही- साथ उन्होंने शोषक वर्गों के प्रति करारा व्यंग्य भी किया है ।मुक्तिबोध का दृष्टिकोण यथार्थवादी था, जिसके माध्यम से उन्होंने तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक परिस्थितियों का चित्रण किया है।

मुक्तिबोध जी सामाजिक, आर्थिक समता के पक्षधर हैं। उनका यह मानना है कि जब तक शोषक और शोषित का भेद समाप्त नहीं होगा, तब तक समाज में खुशहाली का आना असंभव है।वे कहते हैं-

पिसा गया वह भीतरी
और बाहरी दो कठिन पाटों के बीच
कैसी ट्रेजेडी है नीच ।"[11]

मुक्तिबोध ने समकालीन कविता के लिए भी नए आयाम बनाने की कोशिश की है। उन्होंने यथार्थ को जीवन से जोड़कर मानव को नया संदेश दिया है। उनके संबंध में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा है – "दरअसल मुक्तिबोध की कविता ने कविता की मान्यता बदल दी। उनकी कविता प्रचलित काव्य परिपाटी का ध्वंस करती है और कहना न होगा कि उनके बाद की कविता ने उनके मुहावरे और तेवर का अधिकतम अनुकरण किया है। आज जो आलोचक मुक्तिबोध के काव्य को मार्क्सवादी या अस्तित्ववादी या रहस्यवादी कटघरे में रखकर जांचना- परखना चाहते हैं उन्हें समझना चाहिए कि वे इनमें फिट नहीं बैठते। वे पूंजीवादी व्यवस्था का जितना विरोध करते हैं उतना ही मनुष्य को दबाने वाली तानाशाही सत्ता का भी। वे मनुष्य के भीतरी सत्य को विवेक, संकल्प और अनुभव- सत्य को भी बराबर रेखांकित करते हैं।"[12]

राजेश जोशी ने छोटे-छोटे विषयों को लेकर अत्यंत गंभीरता के साथ सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया है। वे समकालीन कविता के प्रमुख हस्ताक्षर माने जाते हैं। उनका मानना है कि समाज में बदलाव के लिए क्रांति आवश्यक है। इसे वे 'एक दिन बोलेंगे पेड़' नामक कविता के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

"देख चिड़िया उस हाथ को देख
जो दिखते दिखते अचानक

सलाखों में बदल जाती है
इन सबसे निपटने को
काफी नहीं है
पंख होना या सीख लेना उड़ना
बारूद के रंग वाली चिड़िया
बारूद का सुभाव भी सीख
उड़ना गाना
तो, ठीक
ताव खाना भी सीख ।" [13]

'एक दिन बोलेंगे पेड़' समकालीन कविता के कवियों एवं कवयित्रियों ने नारी की स्थिति पर भी विचार किया है क्योंकि वह भी समाज का एक अभिन्न अंग है वह एक पुत्री पत्नी होने के साथ-साथ एक मां भी है जिसे कभी- कभी अपने बच्चों के लिए अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है ।अपने जीवन भर के जमा किए हुए रुपयों को उसे अपनी संतानों पर लुटाना पड़ता है। उसकी स्थिति दयनीय तब हो जाती है, जब इतना करने के बाद भी उसके पुत्र उसे शक की दृष्टि से देखते हैं। इन सब स्थितियों का चित्रण समकालीन कविता की एक सशक्त कवयित्री सुनीता जैन ने 'चौखट पर व उठो माधवी' नामक अपनी कविता में किया है-

"मां नहीं डरती
अपनी भूख या उम्र से
वह डरती है अपने ही बेटे के
सख्त पड़ गए मुख से
अगली दफे जब
वह मांगेगा कुछ रुपए
दो या पांच हजार
कैसे कहेगी तब
कि कुछ भी नहीं है उसके पास
मां डरती है अपने ही
बेटे के बढ़ते शक से।"14

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि समकालीन कविता जीवन यथार्थ को दर्शाने वाली कविता है ।समकालीन कविता का कवि न केवल तत्कालीन समस्याओं की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करता है, बल्कि उन समस्याओं के समाधान हेतु अपना विचार भी प्रकट करता है । यही कारण है कि समकालीन कविता का हिंदी साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। इस संबंध में केदारनाथ सिंह जी का मत है- "स्वाधीनता के ठीक बाद का समय एक नई उठान के साथ शुरू हुआ था, जिसमें थोड़ी- सी आशावादिता भी थी और शायद एक हल्की -सी भविष्य की रोशनी भी। यह रोशनी क्रमशः धुंधली पड़ती गई है और फलत: आशावादिता भी न सिर्फ निरंतर क्षीण होती गई है, बल्कि उस पर लगातार मोहभंग के झटके भी लगते रहे हैं। मेरा मानना है कि इन पचास वर्षों के हिंदी साहित्य को देखा जाए, तो आरंभिक आशावादिता से निरंतर बढ़ते हुए मोहभंग के अनुभवों का वहां एक लंबा दस्तावेज मिल सकता है और इस मोह- भंग की अनेक रूपा अभिव्यक्तियां भी, जो कभी निराशा, कभी आक्रोश, कभी विद्रोह और कभी उदासी- अनेक रंगों में देखी जा सकती है।"[15]

संदर्भ- ग्रंथ

1. वर्तमान साहित्य- कविता विशेषांक, पृष्ठ 356
2. चंद्रकांत देवताले, भूखंड तप रहा है, पृ.82
3. सुरेश शर्मा संपादित, रघुवीर सहाय- 'एक था समय' राजकमल प्रकाशन, पृ.**26**
4. लीलाधर जगूड़ी, 'नाटक जारी है', साक्षात्कार, पृ. 26
5. लीलाधर जगूड़ी, 'बची हुई पृथ्वी' पृ.**114**
6. नरेंद्र सिंह, साठोत्तरी हिंदी कविता में जनवादी चेतना, पृ. 205
7. धूमिल, 'कल सुनना मुझे', 'रोटी और संसद', पृ. 33
8. धूमिल, 'कल सुनना मुझे', 'आज मैं लड़ रहा हूं', पृ. 69
9. धूमिल, 'संसद से सड़क तक', 'पटकथा', पृ. 127
10. मंगलेश डबराल, 'पहाड़ पर लालटेन', पृ. 17-18
11. मुक्तिबोध, 'चांद का मुंह टेढ़ा है' 'ब्रह्मराक्षस', पृ. 17
12. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, दस्तावेज- 9, पृ. 30
13. राजेश जोशी, 'एक दिन बोलेंगे पेड़', पृ.**25**
14. सुनीता जैन, 'चौखट पर व उठो माधवी', पृ. 12
15. केदारनाथ सिंह, मेरे साक्षात्कार,पृ. 19